Toppersnotes®
Unleash the topper in you

Rajasthan Animal Attendant

पशु परिचर

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

भाग – 1

राजस्थान का सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

संस्करण – जनवरी, 2024

कॉपीराइट © 2024 **SIERRA INNOVATIONS PVT. LTD.**

सभी अधिकार सुरक्षित है। इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति बिना प्रस्तुत या वितरित या किसी भी तरह से जिसमें फोटोकॉपी या अन्य इलेक्ट्रॉनिक या मैकेनिकल तरीके शामिल है, में प्रेषित नहीं हो सकता है। किसी भी प्रकार की छेड़छाड या संशोधन करना कॉपीराइट कानूनों का उल्लघंन होगा और कानूनी कार्यवाही के लिए उत्तरदायी होगा। सम्पादक का नैतिक अधिकार प्रमुख किया गया है। यह SIERRA INNOVATIONS PVT. LTD. के द्वारा मुद्रित किया गया है।

किसी भी प्रकार की समस्याओं, सुझावों और फीड़बैक के लिए सम्पर्क करें :–

hello@toppersnotes.com

मुख्य कार्यालय – टॉपर्सनोट्स
SIERRA INNOVATIONS PVT. LTD.
H–176, ओसवाल फैक्ट्री के पास,
मालवीय नगर इंडस्ट्रियल एरिया,
मालवीय नगर, जयपुर,
राजस्थान–302017

मूल्य – 999/–

Website- www.toppersnotes.com
Email- hello@toppersnotes.com
Phone – 9614-828-828

RAJASTHAN ANIMAL ATTENDANT (PASHU PARICHAR)

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति	
1.	राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत	**1**
2.	राजस्थान के पुरातात्विक स्थल	**12**
3.	प्रमुख राजवंश – मेवाड़ का इतिहास	**19**
4.	राठौड़ राजवंश और मारवाड़ का इतिहास	**34**
5.	चौहानों का इतिहास	**45**
6.	आमेर का इतिहास (कच्छवाहा वंश)	**57**
7.	राजस्थान और 1857 का विद्रोह	**67**
8.	राजस्थान में किसान आंदोलन	**74**
9.	राजस्थान में जनजातीय आंदोलन	**81**
10.	राजस्थान में राजनीतिक जागृति	**84**
11.	प्रजामंडल आंदोलन	**92**
12.	राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण	**99**
13.	राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला	**104**
14.	राजस्थान की चित्रकला एवं लोक कला	**124**
15.	राजस्थान के हस्तशिल्प	**136**
16.	लोक गीत एवं वाद्य यंत्र	**142**
17.	राजस्थान के लोक नृत्य	**153**
18.	राजस्थान के लोक नाट्य	**160**
19.	राजस्थान के संत और लोक देवी – देवता	**164**
20.	राजस्थानी भाषा एवं साहित्य	**180**
	राजस्थान का भूगोल	
1.	राजस्थान का सामान्य परिचय	**194**
2.	राजस्थान का भौतिकीय स्वरूप	**198**
3.	संभाग एवं जिला परिदृश्य	**201**
4.	राजस्थान का भौगोलिक विभाजन	**218**
5.	राजस्थान की जलवायु	**228**
6.	राजस्थान में मृदा	**237**
7.	खनिज तत्व	**241**
8.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	**256**
9.	राजस्थान में वनस्पति एवं वन	**277**
10.	राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्यजीव अभयारण्य	**282**
11.	राजस्थान की जनसंख्या	**294**

1 CHAPTER राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत

- **इतिहास के जनक** - यूनान के हेरोडोटस
  - इन्होंने 2500 वर्ष पूर्व **हिस्टोरिका** नामक **ग्रन्थ** की रचना की ।
  - **भारत** का **उल्लेख** भी किया ।
- **भारतीय इतिहास के जनक** - वेद व्यास
  - **महाभारत** की रचना की थी ।
  - महाभारत का **प्राचीन नाम** - जय संहिता
- **राजस्थान इतिहास के जनक** - कर्नल जेम्स टॉड ।
  - वर्ष 1818 से 1821 के मध्य **मेवाड़** (उदयपुर) प्रांत के **पोलिटिकल एजेन्ट** थे ।
  - **घोडे** पर **घूम**-घूम कर **राजस्थान इतिहास** को लिखा ।
    - अतः **घोडे वाले बाबा** भी कहे जाते है ।
  - **एनल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ़ राजस्थान/ सेन्ट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट ऑफ इंडिया** - लन्दन में 1829 में प्रकाशन ।
  - गौरी शंकर हीराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) - **सर्वप्रथम हिन्दी अनुवाद** ।
  - **अन्य पुस्तक** - ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया
  - **मृत्यु पश्चात** 1837 में पत्नी द्वारा **प्रकाशन** ।

पुरातात्विक स्रोत

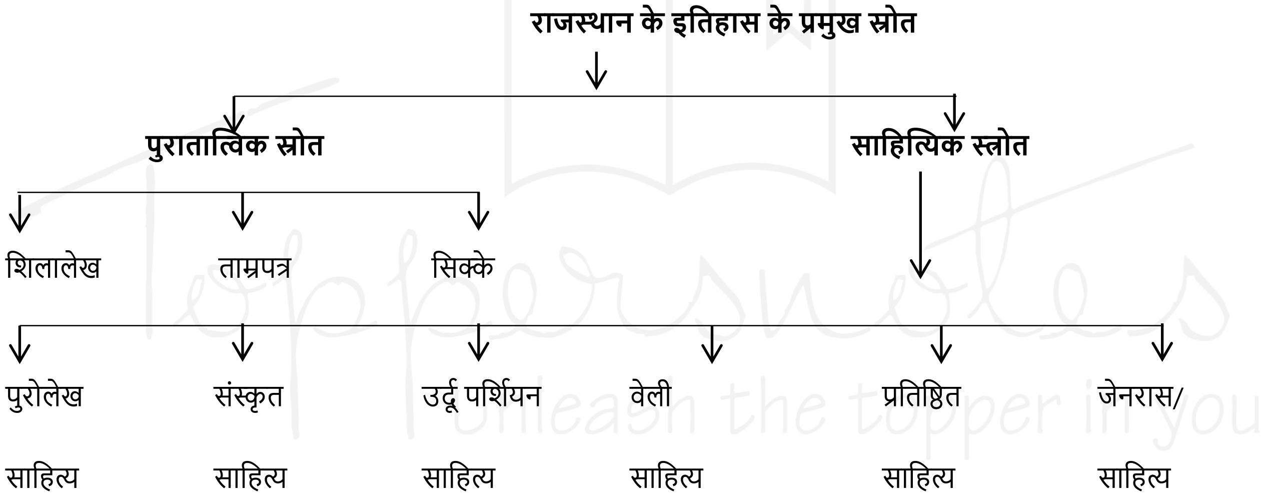

शिलालेख

रायसिंह प्रशस्ति (बीकानेर 1594)	• प्रशास्तिकार- जैन मुनि जैता। • इसमें राव बिका से लेकर राव रायसिंह तक के बीकानेर के शासकों की उपलब्धियों का वर्णन है । • इसके अनुसार बीकानेर दुर्ग का निर्माण 30 जनवरी 1589 से 1594 तक राव रायसिंह ने अपने मंत्री करमचंद द्वारा पूरा करवाया था।
मंडौर अभिलेख (837 ई में जोधपुर)	• यह गुर्जर नरेश बाउक की प्रशस्ति है।
	• इस में गुर्जर प्रतिहारों की वंशावली, विष्णु एवं शिव पूजा का उल्लेख किया गया है।
सच्चिया माता की प्रशस्ति (1179 ओसिया ,जोधपुर(	• यह ई. का है। • सच्चिया माता का मंदिर, में उत्कीर्ण किया गया है। • इसमें कल्हण को महाराजा एवं कीर्तिपाल को मांडव्यपुर का अधिपति बताया गया है।
बिजौलिया शिलालेख	• 1170 ईमें इसे बिजौलिया . कस्बे के पार्श्वनाथ मन्दिर परिसर की एक बड़ी चट्टान पर संस्कृत में उत्कीर्ण किया गया।

	• इस अभिलेख की स्थापना जैन **श्रावक लोलक द्वारा** करवाई गई थी तथा इसके लेखक **कायस्थ केशव** थे। • रचयिता- गुणभद्र। • इसमें सांभर व अजमेर चौहानों को **वत्सगोत्रीय ब्राह्मण बताते** हुए वंशावली दी गई है। • विग्रह राज चतुर्थ का दिल्ली पर अधिकार बताया है
बसंतगढ़ अभिलेख (625ई. सिरोही)	• यह बसंतगढ़ के (सिरोही) माता मंदिर (खिमेल) क्षेमकरी से प्राप्त हुआ है। • वर्तमान में यह अजमेर के राजपूताना म्यूज़ियम में सुरक्षित है। • यह अर्बुद देश के राजा वर्मलात के सामंत राज्जिल तथा राज्जिल के पिता वज्रभट्ट का वर्णन (सत्याश्रय) करता है। • इस अभिलेख में राजस्थान शब्द का प्राचीनतम प्रयोग **'राजस्थानीयादित्य' के रूप में किया गया है।**
चिरवे का अभिलेख (1273 ई. \ वि.सं. 1330 उदयपुर)	• यह 1273 ई का है • **प्रशस्तकार** – रत्नप्रभ सूरी • **इसके शिल्पी** – देल्हण • इस पर 36 पंक्तियों में 51 श्लोक देवनागरी लिपि और **संस्कृत भाषा** में लिखे गए है। • गुहिल वंशीय बप्पा के वंशधर पदम सिंह, जैत्र सिंह, तेज सिंह और समर सिंह की उपलब्धियो का उल्लेख • एकलिंगजी के अधिष्ठाता पाशुपत योगियों के अग्रणी शिवराशि का भी वर्णन किया गया है।
अपराजित का शिलालेख	• 661 ईमें उदयपुर जिले के . नागदे गाँव के निकट कुंडेश्वर मंदिर की दीवार पर अंकित किया गया। • रचयिता - दामोदर था।

	• 7वीं सदी के मेवाड़ के इतिहास की जानकारी।
सामोली अभिलेख (उदयपुर)	• यह अभिलेख 646 ईका है। . • 5वां राजा के समय का अभिलेख है, जो संस्कृत भाषा और कुटिल लिपि में लिखा गया है। • इसके अनुसार वटनगर से आये हुए महाजन (सिरोही) समुदाय के मुखिया**अंतक महत्तर** ने अरण्यवासिनी देवी जावर माता का)) मंदिर बनवाया था। • जैतक महत्तर ने 'बुक' नामक सिद्धस्थान पर अग्नि समाधि ले ली। • यह अभिलेख जावर के निकट अरण्यगिरी में तांबे व जस्ते के खनन उद्योग की जानकारी देता है।
आमेर का लेख	• निर्माण - 1612 ई. में • इसमें कछवाहा वंश को **रघुवंशतिलक"'** कहकर संबोधित किया गया है। • इसमें पृथ्वीराज एवं उसके पुत्र भगवानदास और उसके पुत्र महाराजधिराज मानसिंह के नाम क्रम से दिए गए हैं। •
भाब्रू शिलालेख	• यहाँ अशोक मौर्य के 2 शिलालेख मिले हैं आबू शिलालेख और बैराठ शिलालेख • यह 1837 में "बीजक की पहाड़ी से कैप्टन बर्ट द्वारा खोजा गया था। • वर्तमान में यह कलकता संग्रहालय में रखा है • जिसकी वजह से इसे कलकत्ता-वैराठ लेख कहा जाता है। • इससे अशोक के बुद्ध धर्म का अनुयायी होना सिद्ध होता है। • इसे मौर्य सम्राट अशोक ने स्वयं उत्कीर्ण करवाया था

घोसुण्डी शिलालेख (RAS Pre 2016)	• सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख | • द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व , घोसुण्डी ,चित्तौडगढ़ से प्राप्त हुआ • भाषा -संस्कृत, लिपि- ब्राह्मी | • सर्वप्रथम डी आर भंडारकर द्वारा पढ़ा गया | • **वैष्णव या भागवत** संप्रदाय से संबंधित • कई शिलाखण्डों में टूटा हुआ । • एक बड़ा खण्ड उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित | • अश्वमेध यज्ञ करने और विष्णु मंदिर की चारदीवारी बनवाने का वर्णन है।
नगरी का शिलालेख	• काल 200-150 ई.पू. • ब्राह्मी लिपि में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण किया गया है। • इसकी लिपि घोसुण्डी के लेख से मिलती है • घोसुण्डी शिलालेख नगरी शिलालेख में जुड़वा अभिलेख | • राजस्थान वर्तमान में राजस्थान के उदयपुर संग्रहालय में स्थित
मानमोरी का शिलालेख (सन 713 ई.)	• मौर्य वंश से सम्बंधित यह लेख **चितौड़ के पास मानसरोवर** झील के तट से कर्नल टॉड को मिला था। • इसका प्रशास्तिकार **नागभट्ट का पुत्र पुष्य** है और उत्कीर्णक करुण का पौत्र **शिवादित्य** है। • चित्रांगद मौर्य का उल्लेख है जिसने चितौड़गढ़ का निर्माण करवाया। • अमृत मंथन की कथा का उल्लेख किया गया है। • कर्नल जेम्स टॉड ने इसे इंग्लैंड ले जाते समय असंतुलन की वजह से समुद्र में फेंक दिया था। इसमें भीम को अवन्तिपुर का राजा बताया है।

राज प्रशस्ति (1676 ई./वि.स. 1732)	• प्रशस्तिकार- रणछोड़भट्ट तैलंग • महाराणा राजसिंह सिसोदिया के समय स्थापित करवाया गया था। • यह राजसमन्द झील की 9 चौकी की पाल पर 25 श्लोकों में उत्कीर्ण विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति है। • इसमें बापा रावल से लेकर राणा जगतसिंह द्वितीय तक की गुहिलों की वंशावली है। • इसमें महाराणा अमरसिंह द्वारा की गई **मुगल मेवाड संधि** का वर्णन है।
कुम्भलगढ़ शिलालेख (1460 ई.)	• 1460 ई के आसपास कुम्भलगढ़ में प्राप्त हुई। • प्रशास्तिकार उत्कीर्णक /- कवि महेश • राजस्थान के राजसमंद जिले के कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित कुम्भश्याम मंदिर में स्थित 5 शिलाओं में उत्कीर्ण है। • इसमें प्रयुक्त **भाषा संस्कृत** और **लिपि देव नागरी** है। • इसमें गुहिल वंश और उनकी उपलब्धियों का वर्णन है। • इसमें बापा रावल को **विप्रवंशीय** बताया गया है। • इसमें हम्मीर का चेलावाट जीतने का वर्णन है और **उसे विषमघाटी पंचानन** कहा गया है। • उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित है • इसमें मेवाड़ की तत्कालीन भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्थति की जानकारी मिलती है
कीर्तिस्तंभ प्रशस्ति(1460 ई.)	• **प्रशस्तिकार**- महेश भट्ट • **रचयिता**- अत्रि और महेश • यह राणा कुम्भा की प्रशस्ति है। • गुहिल वंश के बप्पा रावल से लेकर कुम्भा तक की विस्तृत

	जीवनी का वर्णन किया गया है। • इसमें कुम्भा को महाराजाधिराज, अभिनव भारताचार्य, हिन्दू सुरताण, रायरायन, राणो रासो छापगुरु, दानगुरु, राजगुरु, शैलगुरु आदि के नाग से वर्णित किया गया है। • इसमें मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं को कुम्भा द्वारा पराजित किया जाने का वर्णन किया गया है।
रणकपुर प्रशस्ति(1439ई. या वि.सं. 1496), पाली	• 1439 ई में रणकपुर के चौमुखा मंदिर में उत्कीर्ण करवाया गया । • **प्रशस्तिकार** - दैपाक • मेवाड के राजवंश एवं भरणक सेठ के वंश का परिचय मिलता है। • कुम्भा की विजय का वर्णन मिलता है । • बप्पा एवं कालभोज को अलगअलग व्यक्ति बताया - गया है। • गुहिलों को बाप्पा रावल के पुत्र बताया गया है।

जगन्नाथराय प्रशस्ति	• प्रशस्तिकार - कृष्णभट्ट • इसकी लिपि देवनागरी और भाषा संस्कृत है • इसमें बापा रावल से लेकर जगतसिंह सिसोदिया तक गुहिलों का वर्णन है। • यह उदयपुर के जगन्नाथ राय मंदिर में स्थित है। • प्रताप के समय लडे गए हल्दीघाटी के युद्ध का वर्णन किया गया है। • प्रशस्ति के अनुसार महाराणा ने पिछोला के तालाब में मोहन मंदिर बनवाया और रूपसागर तालाब का निर्माण करवाया।
श्रृंगी ऋषि का शिलालेख (1428ई. उदयपुर)	• इसे 1428 ईमें उत्कीर्ण . करवाया गया। • यह लेख मोकल के समय का है। • मोकल द्वारा कुण्ड बनाने और उसके वंश का वर्णन किया गया है। • रचनाकार कविराज वाणी बिलारा योगेश्वर • भाषा- संस्कृत

अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ

नाम	**स्थान**	**काल**	**विवरण**
बरली का शिलालेख	अजमेर (भिलोट माता के मन्दिर से)	दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व	• राजस्थान का प्राचीनतम शिलालेख • ब्राह्मी लिपि • वर्तमान में अजमेर संग्राहलय में सुरक्षित है
नान्दसा यूप स्तम्भ लेख	भीलवाड़ा	225 ई.	• सोम द्वारा स्थापना
बड़वा यूप अभिलेख	कोटा (बडवा गाँव में)	238-39 वि.सं./ 181 ई. में	• भाषा संस्कृत एवं लिपि ब्राह्मी उत्तरी है । • मौखरी राजाओं का वर्णन मिलता है सबसे पुराना और पहला अभिलेख । • तीन यूप (स्तंभ)पर उत्कीर्ण है ।
भ्रमरमाता का लेख	चित्तौड़	490 ई.	• गौरवंश और औलिकरवंश के शासकों का वर्णन मिलता है • रचयिता - मित्रसोम का पुत्र ब्रह्मसोम • लेखक - पूर्वा
कणसवा अभिलेख	कोटा	738 ई.	• मौर्य वंशी राजा धवल का उल्लेख (शायद राजस्थान का अंतिम मौर्य शासक)
ग्वालियर प्रशस्ति		880 ई.	• मिहिरभोज प्रथम की देंन • संस्कृत एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण • लेखक – भट्टधनिक का पुत्र बालादित्य • गुर्जर प्रतिहारों के वंशावलियों एवं उपलब्धियों का उल्लेख मिलता है
प्रतापगढ़ अभिलेख	प्रतापगढ़	946 ई.	• गुर्जर प्रतिहार नरेश महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का

			वर्णन है।
अचलेश्वर प्रशस्ति	आबू		• इसमें पुरुष के अग्निकुंड से उत्पन्न होने का उल्लेख है। • परमारों का मूल पुरुष धूमराज होने का वर्णन है ।
लूणवसही की प्रशस्ति	आबू-देलवाड़ा	1230 ई.	• भाषा - संस्कृत • इसमें आबू के परमार शासकों और वास्तुपाल तेजपाल के वंश का वर्णन है
नेमीनाथ की प्रशस्ति	आबू	1230 ई.	• रचयिता - सोमेश्वरदेव (शुभचन्द्र) • इसे सूत्रधार चण्डेश्वर ने खोदा था ।
रसिया की छतरी का लेख	चित्तौड़गढ़	1331	• रचयिता - प्रियपटु के पुत्र नागर जाति के ब्राह्मण वेद शर्मा • उत्कीर्णकर्ता - सूत्रधार सज्जन • इसमें गुहिल को बापा का पुत्र बताया गया है।
माचेड़ी की बावली का दूसरा शिलालेख	अलवर	1458 ई.	• इसमें अलवर में बड़ गुर्जर वंशी रजपालदेव राज्य पर अधिकार होने का वर्णन है ।
बरबथ का लेख	बयाना	1613-14 ई.	• इसमें अकबर की पत्नी मरियम उस -ज़मानी के द्वारा बरबथ में एक बाग़ और बावड़ी का निर्माण करने का उल्लेख बड़ है।
बर्नाला यूप स्तम्भ लेख	जयपुर	227 ई.	
चाटसू अभिलेख	जयपुर	813 ई.	• गुहिल वंशीय भरत्रभट्ट और उसके वंशजो का वर्णन है। • सूत्रधार – देइआ
बुचकला अभिलेख	जोधपुर(बिलाडा)	815 ई.	• वत्सराज के पुत्र नागभट्ट प्रतिहार का उल्लेख है ।
राजौरगढ़ अभिलेख	अलवर	960 ई.	• मथनदेव प्रतिहार
हर्ष अभिलेख	सीकर	973 ई.	• चौहानों के वंशक्रम का उल्लेख । • हर्षनाथ (सीकर) मंदिर का निर्माण अल्लट द्वारा करवाये जाने का उल्लेख । • वागड़ को वार्गट कहा गया
रसिया की छतरी का शिलालेख	चित्तोडगढ	1274 ई.	• गुहील वंशीय शाशकों की जानकारी (बाप्पा से नरवर्मा तक) • रचनाकार- प्रियपटु के पुत्र वेद शर्मा
डूंगरपुर की प्रशस्ति	डूंगरपुर	1404 ईं	• उपरगाँव (डूंगरपुर) में में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण । • वागड के राजवंशों के इतिहास का वर्णन।

सिक्के

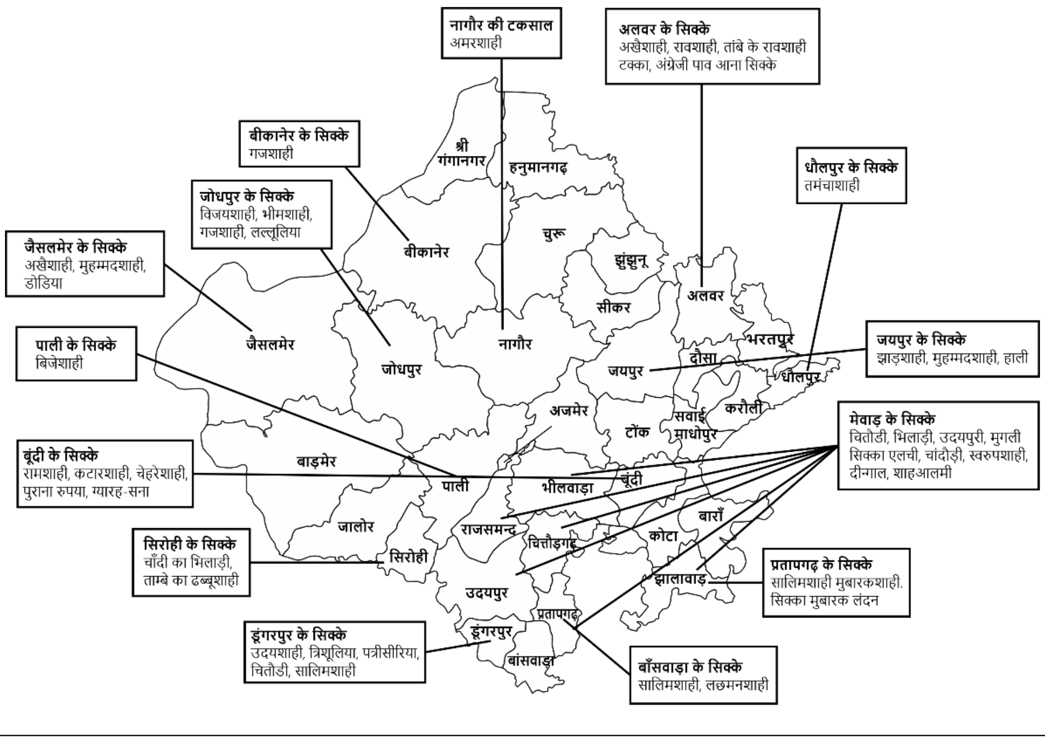

सिक्को का अध्ययन - न्यूमिसमेटिक्स

- भारतीय इतिहास, सिंधु घाटी सभ्यता और वैदिक सभ्यता में सिक्को का व्यापार - **वस्तु विनियम पर आधारित।**
- **सर्वप्रथम सिक्को का प्रचलन** - 2500 वर्ष पूर्व
  - मुद्राएँ उत्खनन के दौरान **खण्डित अवस्था** में प्राप्त।
  - **विशेष चिन्ह** बने हुए है - अतः इन्हें **आहत मुद्राएँ/ पंचमार्क सिक्के** भी कहते है।
  - वर्गाकार, आयाताकार व वृत्ताकार रूप में है।
- **कौटिल्य के अर्थशास्त्र** - सिक्को को **पण/ कार्षापण की संज्ञा** - अधिकांशतः चाँदी धातु के।
- **सर्वप्रथम राजस्थान** के **चौहान वंश** ने मुद्राएँ जारी की।
  - **ताँबे के सिक्के -** द्रम्म और विशोपक
  - **चाँदी के सिक्के** - रूपक
  - **सोने के सिक्के** - दीनार
- मेवाड़ में प्रचलित सिक्के –
  - **ताम्बे के सिक्के-** ढिंगला, भिलाडी. त्रिशुलिया, भिन्डीरिया ,नाथद्वारिया
  - **चांदी के** सिक्के- द्रम्म , रूपक
- अकबर ने राजस्थान में **सिक्का एलची** जारी किया।(चित्तोड़ विजय के बाद)
  - **अकबर** के **आमेर** से **अच्छे संबंध** थे।
    - अतः वहाँ **सर्वप्रथम टकसाल** खोलने की अनुमति दी गई।
- **राजस्थान के प्राचीन सिक्के**
- अंग्रेजों के समय जारी **मुद्राओं में कलदार** (चाँदी) **सर्वाधिक प्रसिद्ध**

महत्वपूर्ण तथ्य

- तत्कालीन राजपूताना की रियासतो के सिक्कों के विषय पर केब ने 1893 ई. मैं "द करेंसी ऑफ द हिंदू स्टेट ऑफ राजपूताना" नामक पुस्तक लिखी।
- रैढ़ (टोंक) की खुदाई से 3075 चांदी के पंचमार्क सिक्के मिले हैं जो भारत के प्राचीनतम सिक्के हैं और एक ही स्थान से मिले सिक्कों की सबसे बड़ी संख्या है।
  - इन सिक्कों को धरण या पण कहा जाता था।
- रंगमहल (हनुमानगढ़) से आहत मुद्रा एवं कुषाण कालीन मुद्राएं मिली है।
  - कुषाण कालीन शिक्षकों को मुरण्ड़ा कहा गया है और यहां से प्रथम कुषाण कनिष्क का सिक्का भी मिला है।
- बैराठ सभ्यता (जयपुर) से भी अनेक मुद्राएं मिली है जिनमें से 16 मुद्राएं प्रसिद्ध यूनानी शासक मिनेण्डर की है।

*** RAS Pre 2018**

- इंड़ो - सासानी सिक्कों की भारतीयों ने गधिया नाम से पहचान की है जो चांदी और ताम्र धातु होते बने हुए होते थे।
- मेवाड़ के स्वरूपशाही और मारवाड़ के आलमशाही सिक्के ब्रिटिश प्रभाव वाले थे जिनमें "औरंग आराम हिंद एवं इंग्लिस्तान क्वीन विक्टोरिया" लिखा होता था।
- राजस्थान में सर्वप्रथम 1900 ई. में स्थानीय सिक्कों के स्थान पर कलदार का चालान जारी हुआ।

रियासत	सिक्के
बीकानेर	गजशाही सिक्के (चाँदी)
जैसलमेर	मुहम्मदशाही, अखैशाही, डोडिया (ताँबा)
उदयपुर	स्वरूपशाही, चांदोडी, शाहआलमशाही, ढीगाल , त्रिशुलियां, भिलाडी, कर्षापण, भीड़रिया, पदमशाही
डूँगरपुर	उदयशाही, त्रिशूलिया, पत्रिसीरिया, चित्तौडी, सालिमशाही सिक्का
बाँसवाड़ा	सालिमशाही सिक्का , लक्ष्मणशाही
प्रतापगढ	सालिमशाही, मुबारकशाही, सिक्का मुबारक, लंदन सिक्का
शाहपुरा	संदिया, मधेशाही, चित्तौडी, भिलाड़ी सिक्का
कोटा	गुमानशाही, हाली, मदनशाही सिक्के
झालावाड	पुराने और नए मदनशाही सिक्के
करौली	माणकशाही
धौलपुर	तमंचाशाही सिक्का
भरतपुर	शाहआलमा
अलवर	अखैशाही, रावशाही सिक्के , ताँबे के रावशाही सिक्का, अंग्रेजी पाव आना सिक्का
जयपुर	झाड़शाही, मुहम्मदशाही, हाली
जोधपुर	विजयशाही, भीमशाही, गदिया, गजशाही , लल्लूलिया रूपया
सोजत	लल्लूलिया (पाली) एवं लाल्लुशाही सिक्के
सलूम्बर	पदमशाही (ताम्रमुद्रा)
किशनगढ़	शाहआलमी
बूँदी	रामशाही सिक्का ग्यारह- सना, कटारशाही,चेहरेशाही, पुराना रुपया
नागौर की टकसाल	अमरशाही, कुचामनिया सिक्का (कुचामन टकसाल) इसे **इक्तिसंदा, बोपुशाही , बोरसी** भी कहते है
पाली	बिजैशाही
सिरोही	चाँदी की भिलाड़ी , ताँबे का ढब्बूशाही
सलूम्बर	पदमशाही

ताम्रपत्र

राजस्थान के प्रमुख ताम्र पत्र

ताम्र पत्र	काल	के बारे में
धुलेव का दान पत्र	679 ई.	• किष्किंधा (कल्याणपुर) के महाराज भेटी ने अपने महामात्र आदि अधिकारियों को आज्ञा दी और उन्हें सूचित किया कि उन्होंने महाराज बप्पदन्ति के श्रेयार्थ और धर्मार्थ उबारक नामक गाँव को भट्टीनाग नामक ब्राह्मण को दान में दिया था।
ब्रोच गुर्जर ताम्रपात्र	978 ई.	• गुर्जर वंश के सप्तसैंधव भारत से लेकर गंगा कावेरी तक के अभियान का वर्णन। • इसके आधार पर कनिंघम ने राजपूतों को कुषाणों की यू-ए-ची जाति माना।
मथनदेव का ताम्र-पत्र	959 ई.	• मंदिर के लिए भूमि दान की व्यवस्था का उल्लेख है।
वीरपुर का दान पत्र	1185 ई.	• इसमें गुजरात के चालुक्य राजा भीमदेव के सामंत वागड़ के गुहिल वंशीय राजा अमृतपालदेव के सूर्यपर्व पर भूमिदान देने का उल्लेख है।
आहड़ ताम्र-पत्र	1206 ई.	• गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव (द्वितीय) का है। • गुजरात के मूलराज से भीमदेव द्वितीय तक सोलंकी राजाओं की वंशावली दी गई है ।
पारसोली का ताम्र-पत्र	1473 ई.	• महाराणा रायमल के समय का है। • भूमि की किस्मों का उल्लेख – पीवल, गोरमो, माल, मगरा । ○ यह भूमि उस समय की सभी लागतों से मुक्त थीं।
खेरादा ताम्र-पत्र	1437 ई.	• महाराणा कुंभा के समय का है। • शंभू को 400 टके (मुद्रा) के दान का उल्लेख है। • एकलिंगजी में राणा कुंभा द्वारा किए गए प्रायश्चित, उस समय का दान, धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलती है।
चीकली ताम्र-पत्र	1483 ई.	• किसानों से एकत्र किए जाने वाले 'विविध लाग-बागों' को दर्शाता है। • पटेल, सुथार और ब्राह्मणों द्वारा खेती का वर्णन।
ढोल का ताम्र-पत्र	1574 ई.	• महाराणा प्रताप के समय का है जब उन्होंने ढोल नामक एक गाँव की सैन्य चौकी का प्रबंधन किया था और अपने प्रबंधक जोशी पुणो को ढोल में भूमि अनुदान दिया।
ठीकरा गाँव का ताम्र-पत्र	1464 ई.	• गाँव के लिए यहाँ 'मौंजा' शब्द का प्रयोग किया गया है।
पुर का ताम्र-पत्र	1535 ई.	• महाराणा श्री विक्रमादित्य के समय का है। • जौहर में प्रवेश करते समय हाड़ी रानी कर्मवती द्वारा दिए गए भूमि अनुदान के बारे में जानकारी । • जौहर प्रथा पर प्रकाश डालता है - चित्तौड़ के दूसरे साके का सटीक समय बताता है।
कोघाखेड़ी (मेवाड़) का ताम्रपत्र	1713 ई.	• कोघाखेड़ी गाँव का उल्लेख जिसे महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय ने दिनकर भट्ट को हिरण्याशवदान में दिया था।
गाँव पीपली (मेवाड़) का ताम्रपात्र	1576 ई.	• महाराणा प्रतापसिंह के समय का है। • स्पष्ट करता है कि हल्दीघाटी के युद्ध के बाद, महाराणा ने मध्य मेवाड़ के क्षेत्र में लोगों को बसाने का काम शुरू किया। • युद्ध के समय में जिन लोगों को नुकसान उठाना पड़ता था, उन्हें कभी-कभार मदद दी जाती थी।
कीटखेड़ी (प्रतापगढ़)	1650 ई.	• कीटखेड़ी गाँव के भट्ट विश्वनाथ को दान देने से संबंधित है।

का ताम्रपत्र		• राजमाता चौहान द्वारा निर्मित गोवर्धननाथजी के मंदिर की प्रतिष्ठा के समय दिया गया था।
डीगरोल गाँव का ताम्र-पत्र	1648 ई.	• महाराणा जगतसिंह के काल का है।
रंगीली ग्राम (मेवाड़) का ताम्रपत्र	1656 ई.	• महाराणा राजसिंह के समय का है। ○ उन्होंने गंधर्व मोहन को रंगीला नामक गाँव दिया ○ गाँव में खड़, लाकड और टका की लागत को हटा लिया गया ।
बेडवास गाँव का दान पत्र	1643 ई.	• समरसिंह (बांसवाड़ा) के काल का है। • हल भूमि दान का उल्लेख है।
राजसिंह का ताम्रपत्र	1678 ई.	• महाराणा राज सिंह के समय का है।
पारणपुर दान पत्र	1676 ई.	• महाराजा श्री रावत प्रतापसिंह के काल का है। • उस समय के शासक वर्ग के नाम और धार्मिक उद्यापन की परंपरा का उल्लेख है। • टकी, लाग और रखवाली आदि करों का भी वर्णन है।
पाटन्या ग्राम का दान पत्र	1677 ई.	• महारावत प्रतापसिंह (प्रतापगढ़) द्वारा पाटन्या गाँव को महता जयदेव को दान देने का उल्लेख है। • आरंभिक पंक्तियों में गुहिल से लेकर भर्तृभट्ट तक के गुहिल राजाओं के नाम दिए गए हैं।
सखेडी का ताम्रपात्र	1716 ई.	• महारावत गोपाल सिंह के काल का है। • लागत-विलगत के साथ एक स्थानीय कर कथकावल का उल्लेख ।
बेंगू का ताम्रपत्र	1715 ई.	• महाराणा संग्राम सिंह के समय का है।
वरखेड़ी का ताम्रपत्र	1739 ई.	• महारावत गोपाल सिंह के समय का ○ कान्हा के बारे में उल्लेख है कि उन्हें लाख पसाव में वरखेदी गाँव और लखणा की लागत दी गई थी। ○ इसमें 'लाख पसाव' एक इनाम था और लखना की लागत बहुत मायने रखती है।
प्रतापगढ़ का ताम्रपात्र	1817 ई.	• महारावत सामंत सिंह के समय का है। • राज्य में लगे ब्राह्मणों पर 'टंकी' कर को हटाने का उल्लेख
ग्राम गड़बोड़ का ताम्रपात्र	1739 ई.	• महाराणा श्री संग्राम सिंह के समय का।
बाँसवाड़ा के दो दान पत्र	1747 और 1750 ई.	• महारावल पृथ्वी सिंह के समय का है।
बेडवास का ताम्र पत्र	1559 ई.	• उदयपुर बसाने के संवत् 1616 की पुष्टि पर प्रकाश डालता है।
लावा गाँव का ताम्रपत्र	1558 ई.	• महाराणा उदय सिंह ने ब्राह्मण भोला को आदेश दिया कि वह अब भविष्य की लड़कियों की शादी के अवसर पर 'मापा' कर नहीं लेंगे। ○ उस क्षेत्र की लड़कियों का विवाह कराने का उसका अधिकार पूर्ववत रहेगा।`
कुल-पुरोहित का दानपत्र	1459 ई.	इसमें शुभ अवसरों वाले "नेगों" का उल्लेख है।

पुरालेखागारीय स्त्रोत

राज्य अभिलेखागार बीकानेर में निम्नलिखित बहियाँ **संग्रहीत** है:

- **हकीकत बही**- राजा की दिनचर्या का उल्लेख
- **हुकूमत बही** - राजा के आदेशों की नकल
- **कमठाना बही** - भवन व दुर्ग निर्माण संबंधी जानकारी
- **खरीता बही** - पत्राचारों का वर्णन

साहित्यिक स्त्रोत

महत्वपूर्ण तथ्य

- **रास -** 11वीं शताब्दी के आसपास जैन कवियों द्वारा रचा गया ।
- **रासो** - रास के समानांतर राजाश्रय में रासो साहित्य लिखा गया जिसके द्वारा तत्कालीन, ऐतिहासिक,

सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितयों के मूल्यांकन की आधारभूत पृष्ठभूमि निर्मित हुई ।
- यह राजस्थान की ही देन है ।

- **वेलि** - राजस्थानी वेलि साहित्य में यहाँ के षासकों एवं सामन्तों की वीरता, इतिहास, विद्वता, उदरता, प्रेम-भावना, स्वामिभक्ति, वंषावली आदि घटनाओं का उल्लेख होता है ।
- **ख्यात** - ख्यात का अर्थ होता है ख्याति अर्थात यह किसी राजा महाराजा की प्रशंसा में लिखा गया ग्रंथ ।
  - ख्यात में अतिश्योक्ति में पूर्ण प्रशंसा की जाती है।
  - राजस्थान के इतिहास मे 16 वीं शताब्दी के बाद के इतिहास में ख्यातों का महत्वपुर्ण स्थान है।
  - यह वंशावली व प्रशस्ति लेखन का विस्तृत रुप होता है।
  - ख्यात साहित्य गद्य में लिखा जाता है।

पृथ्वीराज रासो, चन्दबरदाई

- यह ग्रन्थ पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि चन्दबरदाई द्वारा पिंगल भाषा में लिखा गया जिसे उसके पुत्र जल्हण द्वारा पूरा किया गया।
- इसमें गुर्जर-प्रतिहार, परमार, सोलंकी/ चालुक्य, और चौहानों की गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि के आबू पर्वत के अग्निकुंड से उत्पत्ति का उल्लेख है।
- यह विशेषकर पृथ्वीराज चौहान के इतिहास पर प्रकाश डालता है ।
  - इसमें संयोगिता हरण और तराइन के युद्ध का वर्णन किया गया है।

प्रचलित विरोक्ति
चार बांस चौबीस गज अंगुल अष्ठ प्रमाण, ता ऊपर सुल्तान है मत चुके चौहाण

मुहणोत नैणसी री ख्यात

- यह मारवाड़ी और डिंगल में लिखा गया है।
- नैणसी (1610- 70) जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के दरबारी कवि एवं दीवान थे।
- इसमें समस्त राजपूताने सहित जोधपुर के राठौड़ो का विस्तृत इतिहास लिखा गया है।

नैणसी को मुंशी देवी प्रसाद द्वारा "राजपूताने का अबुल फजल" कहा गया।

मारवाड़ रा परगना री विगत / गावां री ख्यात

- मुहणोत नैणसी द्वारा कृत है।
- बहुत बड़ी होने के कारण इसे “सर्वसंग्रह” भी कहा जाता है।
- इसमें उस समय की आर्थिक और सामाजिक आकड़ो का वर्णन किया गया है और इसी वजह से इसे “राजस्थान का गजैटियर” भी कहा जाता है

बांकीदास री ख्यात / जोधपुर राज्य री ख्यात

- लेखक - बांकीदास (जोधपुर के महाराजा मानसिंह राठौड़ के दरबारी कवि)
- राठौड़ो और अन्य वंशो का विवरण है।
- मारवाड़ी और डिंगल भाषा में लिखी गई है।

दयालदास री ख्यात

- लेखक - दयालदास सिढायच (बीकानेर के महाराज रतनसिंह के दरबारी कवि)
- इसे मारवाड़ी (डिंगल) भाषा में लिखा गया है।
- इसमें बीकानेर के राठौड़ो के प्रारंभ से लेकर महाराजा सरदारसिंह तक का इतिहास लिखा गया है (2 भाग)

मुण्डियार री (RAS Pre 2013)

- राव सीहा के द्वारा मारवाड में राठौड़ राज्य की स्थापना से लेकर महाराजा जसवंत सिंह प्रथम तक का वृत्तांत मिलता है।
- इस ख्यात मे यह भी लिखा है कि अकबर के पुत्र सलीम की माँ जोधाबाई मोटाराजा उदयसिंह की दत्तक बहिन थी , जिनकी माता मालदेव की दासी थी।

कवि राजा री ख्यात

- इस ख्यात मे जोधपुर के नरेश महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के शासन काल के बारे मे विस्तारपूर्वक बताया गया है।
- इसके अतिरिक्त राव जोधा , रायमल , सूरसिंह के मंत्री भाटी गोबिन्ददास के उपाख्यान भी शामिल है।

किशनगढ़ री ख्यात

- किशनगढ़ के राठौड़ों का इतिहास

भाटियों री ख्यात

- जैसलमेर के भाटियों का इतिहास

राजस्थानी साहित्य	साहित्यकार
पृथ्वीराजरासो	चन्दबरदाई
बीसलदेव रासो	नरपति नाल्ह
हम्मीर रासो	शारंगधर
संगत रासो	गिरधर आंसिया
वेलि क्रिसन रुकमणी री	पृथ्वीराज राठौड़
अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
पाथल और पीथल	कन्हैया लाल सेठिया
धरती धोरा री	कन्हैया लाल सेठिया
लीलटांस	कन्हैया लाल सेठिया
रूठीराणी, चेतावणी रा चूंगठिया	केसरीसिंह बारहठ

राजस्थानी कहांवता	मुरलीधर व्यास
राजस्थानी शब्दकोष	सीताराम लीलास
नैणसी री ख्यात	मुहणौत नैणसी
मारवाड रा परगाना री विगत	मुहणौत नैणसी
राव रतन री वेलि (बूंदी के राजा रतन सिंह के बारे में)	कल्याण दास
कान्हड़दे प्रबंध	कवि पद्मनाभ (अलाउद्दीन के जालौर आक्रमण का वर्णन)
राव जैतसी रो छंद	बीठू सूजा
राजरूपक	वीरभान
सूरज प्रकाश	करणीदान (जोधपुर महाराजा अभयसिंह के दरबारी कवि)
वंश भास्कर	सूर्यमल्ल मिश्रण

संस्कृत साहित्य	साहित्यकार
पृथ्वीराज विजय	जयानक (कश्मीरी)
हम्मीर महाकाव्य	नयन चन्द्र सूरी
हम्मीर मदमर्दन	जयसिंह सूरी
कुवलयमाला	उद्योतन सूरी
वंश भास्कर /छंद मयूख	सूर्यमल्ल मिश्रण (बूँदी)
नृत्यरत्नकोष	राणा कुंभा

भाषा भूषण	जसवंत सिंह
एकलिंग महात्मय	कुम्भा
ललित विग्रराज	कवि सोमदेव
राजवल्लभ	मण्डन (महाराणा कुम्भा के मुख्य कवि)
राजविनोद	भट्ट सदाशिव
कर्मचन्द्र वंशोत्कीर्त्तकं काव्यम्	जयसोम
अमरसार	पंडित जीवधर
राजरत्नाकर	सदाशिव
अजितोदय	जगजीवन भट्ट (जोधपुर राजा अजीतसिंह के दरबारी कवि)

फारसी साहित्य	साहित्यकार
चचनामा	अली अहमद
मिम्ता-उल-फुतूह	अमीर खुसरो
खजाइन-उल-फुतूह	अमीर खुसरों
तुजुके बाबरी (तुर्की) ,बाबरनामा	बाबर
हुमायूनामा	गुलबदन बेगम
अकबरनामा/आइने अकबरी	अबुल फजल
तुजुके जहाँगीरी	जहाँगीर
तारीख -ए-राजस्थान	कालीराम कायस्थ
वाकीया-ए-राजपूताना	मुंशी ज्वाला सहाय

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक युद्ध

वर्ष	युद्ध	के बीच हुआ	परिणाम
1191	तराइन का प्रथम युद्ध	पृथ्वीराज-मोहम्मद गौरी	गौरी की हार हुई
1192	तराइन का द्वितीय युद्ध	पृथ्वीराज-मोहम्मद गौरी	पृथ्वीराज की हार हुई
1301	रणथंभौर का युद्ध	हम्मीरदेव-अलाउद्दीन खिलजी	हम्मीर हार गया
1303	चित्तौड़ का युद्ध	राणा रतन सिंह-अलाउद्दीन खिलजी	राणा रतन सिंह हार गए
1311	सिवाना का युद्ध	सातलदेव चौहान-अलाउद्दीन खिलजी	साहलदेव हार गए
1527	खानवा का युद्ध	राणा सांगा - बाबर	राणा सांगा की हार हुई
1544	सुमेल का युद्ध (जैतारण)	मालदेव-शेरशाह सूरी	मालदेव की हार हुई
1576	हल्दीघाटी का युद्ध	महाराणा प्रताप-अकबर	महाराणा प्रताप हार गए
1582	दिवेर का युद्ध	महाराणा प्रताप, अमर सिंह - मुगल सेना	महाराणा विजयी
1644	मतीरे की राड़	अमरसिंह (नागौर)- कर्णसिंह	अमरसिंह विजयी
1803	लसवारी का युद्ध	दौलत राव सिंधिया-लॉर्ड लेक	सिंधिया की हार हुई

अन्य पुरावशेष

- वेदों में, **सरस्वती नदी** की **वाक्पटुता** और व्यापक रूप से **सराहना** की है।
  - **ऋग्वेद** - प्राचीन **राजस्थान** की "**जीवन रेखा**" ।
  - **मत्स्य** लोगों का भी **उल्लेख** ।
    - **शतपथ ब्राह्मण** - सरस्वती के तट के पास वाले लोग ।
- ब्राह्मण में **सलुवा लोगों** का उल्लेख **मत्स्यों** के साथ एक **जनपद** के रूप में - जिन्होंने अपनी राजधानी **विराट** (जयपुर जिले में वर्तमान बैराठ या विराटनगर) में एक **व्यापक राज्य** विकसित किया।
  - **पांडवों** ने अपने **सहयोगी मत्स्यों** की मदद से विराट में अपने **निर्वासन** की **अवधि** बिताई।
- **महाभारत** - मत्स्य जनपद गौ धन में समृद्ध ; मत्स्य सत्य के लिए प्रसिद्ध था।
  - **मालवों** - महान योद्धाओं की एक जनजाति जिन्होंने कौरवों को पांडवों के खिलाफ उनकी लड़ाई में मदद की।
- **पुराणों** में राजस्थान के **पवित्र स्थान:**
  - **स्कंदपुराण** - भारतीय राज्यों की एक सूची देता है जिसमें राजस्थान के कुछ राज्य शामिल हैं - शाकम्भरा सपादलक्ष; मेवाड़ सपादलक्ष; तोमर सपादलक्ष: वागुरी (बेडेड); विराट (बैराट); और भद्र।
- **चीनी यात्री युआन च्वांग** - पो-ली-ये-ता-लो नामक स्थान का उल्लेख किया है जिसे विराट या बैराट (जयपुर जिला) के समकक्ष माना जाता है।
  - **उनके अनुसार**, "इस शहर के लोग बहादुर और साहसी थे और उनका राजा, जो फी-शी (वैश्य) जाति का था और युद्ध में अपने साहस और कौशल के लिए प्रसिद्ध था।"
- **700-1200 ई. का काल** - साहित्यिक गतिविधि अधिक।
- रचनाओं द्वारा राजस्थान की **राजनीतिक**, **सामाजिक**, **आर्थिक** और **धार्मिक स्थितियों** पर **प्रकाश**।

3 अध्याय संभाग एवं जिला परिदृश्य

- **रामलुभाया कमेठी** की सिफारिशों से **17 मार्च 2023** को **मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत** ने **3 नए संभाग** एवं **19 नए जिले** बनाने कि घोषणा की। वर्तमान समय में राजस्थान में **10 संभाग** एवं **50 जिलें** हो गए है।
- वर्तमान में राजस्थान **सर्वाधिक जिलों** के मामले में **देश** में **उत्तरप्रदेश (75)** व **मध्य प्रदेश (55)** के बाद **तीसरे स्थान** पर है।

नोट - मुख्यमंत्री ने **6 अक्टूबर, 2023** को **मालपुरा, सुजानगढ़, कुचामन सिटी** ओर तीन **नए ज़िले** बनाने की घोषणा की है (प्रस्तावित) अगर ये तीनों जिले बनते है तो भविष्य में राजस्थान में **कुल 53 जिले** हो जायेंगे।]

- **नवीनतम संभाग** - सीकर, बाँसवाड़ा , पाली
- **नवीनतम जिले** - अनूपगढ़ ,गंगापुर सिटी, कोटपूतली, बालोतरा, जयपुर शहर, जयपुर ग्रामीण, खैरथल, ब्यावर, नीमकाथाना, डींग, जोधपुर शहर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, डीडवाना, सलूंबर, दूदू, केकड़ी, सांचौर और शाहपुरा

राजस्थान के संभाग -

नए संभाग एवं जिलों की घोषणा के बाद अब राजस्थान के **50 जिलों** को **प्रशासनिक दृष्टि** से कुल **10 संभागों** में विभाजित किया गया है

क्र.स.	संभाग	गठन वर्ष	ज़िले
1	**जयपुर**	1949	जयपुर शहर , जयपुर ग्रामीण, दूदू, कोटपूतली-बहरोड़ दौसा, खैरथल - तिजारा , अलवर (7 जिले)
2	**जोधपुर**	1949	जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, जैसलमेर, बाड़मेर, बालोतरा (6 जिले)
3	**बीकानेर**	1949	बीकानेर, अनूपगढ़, हनुमानगढ़, गंगानगर (4 जिले)
4	**उदयपुर**	1949	उदयपुर, भीलवाडा, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, सलूम्बर (5 जिले)
5	**कोटा**	1949	कोटा, बूँदी, बारां , झालावाड़ (4 जिले)
6	**अजमेर**	1987	अजमेर, ब्यावर, केकड़ी, नागौर, टोंक, डीडवाना-कुचामन, शाहपुरा (7 जिले)
7	**भरतपुर**	2005	भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, डीग, गंगापुर सिटी (6 जिले)
8	**पाली**	2023	पाली, सांचौर, जालौर, सिरोही (4 जिले)
9	**बाँसवाड़ा**	2023	बाँसवाड़ा , डूंगरपुर, प्रतापगढ़ (3 जिले)
10	**सीकर**	2023	सीकर, झुंझुनू, चुरू, नीमकाथाना (4 जिले)

Unleash the topper in you

- सर्वाधिक जिलों वाले संभाग - जयपुर (7), अजमेर(7), जोधपुर(6), भरतपुर(6), उदयपुर(5)
- न्यनतम जिलों वाले संभाग - बाँसवाड़ा (3), कोटा(4),पाली (4), सीकर(4) बीकानेर (4)

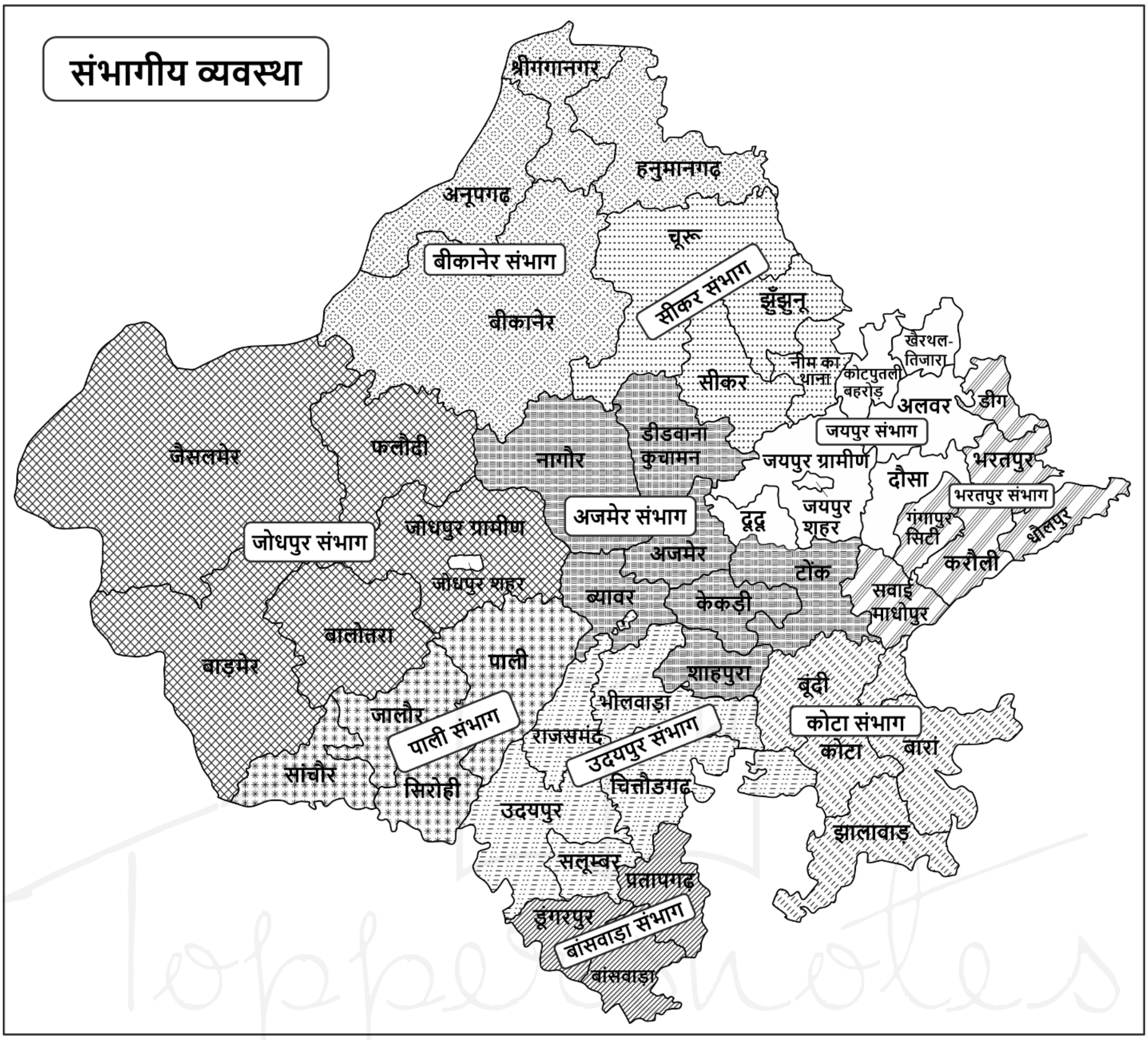

1. **जयपुर संभाग -**

नवीनतम जिलों के गठन के बाद अब **जयपुर संभाग** में **7 जिलों** को शामिल किया गया है तथा कुछ जिलों **(सीकर, झुंझुनू)** को जयपुर संभाग से हटाकर नए संभाग **(सीकर)** में शामिल किया गया है। जयपुर संभाग के अन्तर्गत आने वाले जिले निम्नलिखित है -

- जयपुर शहर, जयपुर ग्रामीण, दूदू, कोटपूतली-बहरोड़ दौसा, खैरथल - तिजारा, अलवर
- पूर्व जयपुर क्षेत्र से निम्नलिखित **निम्नलिखित जिले** बनाये गए
  - जयपुर शहर (पूर्व जयपुर क्षेत्र का शहरी भाग)
  - जयपुर ग्रामीण (पूर्व जयपुर क्षेत्र का ग्रामीण क्षेत्र + आशिक रूप से कुछ शहरी क्षेत्र से)
  - कोटपुतली बहरोड़ (पूर्व जयपुर क्षेत्र + अलवर क्षेत्र से अलग करके)
  - दूदू (पूर्व जयपुर क्षेत्र से अलग करके)

(i) जयपुर शहर (नवीनतम जिला) -

- इस नवीनतम जिले में निम्न लिखित **4 तहसीलों (आंशिक)** को शामिल किया है -
  - ✓ **जयपुर** (जयपुर का नगर निगम जयपुर (हेरिटेज) एवं नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग)
  - ✓ **कालवाड़** (नगर निगम जयपुर ग्रेटर अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग)
  - ✓ **आमेर** (आमेर का नगर निगम जयपुर (हेरिटेज) के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग)
  - ✓ **सांगानेर** (सांगानेर का नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग)
- जयपुर अपनी **समृद्ध भवन निर्माण-परंपरा, सरस-संस्कृति** और **ऐतिहासिक महत्व** के लिए प्रसिद्ध है।
- यह जिला पूर्णत: जयपुर ग्रामीण जिले से सीमा बंद है
- राज्य का राजधानी मुख्यालय
- इसे '**गुलाबी नगरी**' या '**पिंक सिटी**' भी कहा जाता है (स्टैनली रीड ने)

- **महाराजा जयसिंह द्वितीय** (आमेर नरेश) ने **वर्ष 1728** में **जयपुर शहर (हैरीटेज जयपुर)** की स्थापना की थी ।
- इस शहर के वास्तुकारइस शहर के वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य थे ।
- **यूनेस्को** द्वारा **जुलाई 2019** में **जयपुर** को **वर्ल्ड हेरिटेज सिटी** का दर्जा दिया गया है ।
- जयपुर को भारत का **पेरिस** भी कहा जाता है।
- **पर्यटन एवं धार्मिक स्थल** - हवामहल, जंतर-मंतर, आमेर दुर्ग, जयगढ़, नाहरगढ़, मोती डूँगरी किला, जलमहल, ईसरलाट, रामनिवास बाग, सिसोदिया रानी का बाग, कनक घाटी, खोले के हनुमानजी एवं अन्नपूर्णा माता रोपवे, चूलगिरि जैन तीर्थ, गलताजी तीर्थ स्थल, ताल कटोरा, गोविंद देवजी मंदिर आदि।

(ii) जयपुर ग्रामीण (नवीनतम जिला) -

इस नवीनतम जिले में निम्न लिखित **4 (आंशिक) + 14 तहसीलों** को शामिल किया है -

- **4 तहसील (आंशिक)**
  - ✓ **जयपुर** (नगर निगम जयपुर हेरिटेज, नगर निगम जयपुर ग्रेटर के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोड़कर शेष समस्त भाग)
  - ✓ **कालवाड़** (नगर निगम जयपुर ग्रेटर के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोड़कर शेष समस्त भाग)
  - ✓ **सांगानेर** (नगर निगम जयपुर ग्रेटर के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोड़कर शेष समस्त भाग)
  - ✓ **आमेर** (नगर निगम जयपुर हेरिटेज के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोड़कर शेष समस्त भाग)
- **14 तहसील**
  - ✓ जालसू, बस्सी, तूंगा, चाकसू, कोटखावदा, जमवारामगढ़, आंधी, चौमू, फुलेरा, माधोराजपुरा, रामपुरा डाबड़ी, किशनगढ़ रेनवाल, जोबनेर, शांहपुरा
- जयपुर ग्रामीण में बहने वाली नदियों में बाणगंगा, ताल नदी, माधोवती नदी, और रोहडा नदी शामिल हैं
- **पर्यटन एवं धार्मिक स्थल**- शीलतामाता चाकसू, चौमू का किला, गोनेर, सांभर झील (रामसर साइट), जमवारामगढ़ किला, सामोद हनुमानजी मदिर, माधोराजपुरा किला, ज्वाला माता, नरायणा दादू धाम, जगदीश मंदिर, ताला पीर की दरगाह, शांकभरी माता साँभर आदि

(iii) दूदू (नवीनतम जिला) -

- इस नए जिले का गठन **जयपुर** के पृथक कर के बयाना गया है ।
- इस नवीनतम जिले में निम्न लिखित **3 तहसीलों** को शामिल किया है -
  - ✓ दूद, मौजमाबाद, फागी
- **मोजमाबाद** को **सन् 973 ई.** में **परमार शासक राजा मोंज** ने बसाया था।
- आमेर के राजा **मानसिंह प्रथम** का जन्म **मोजामाबाद** में**1550 ई** में हुआ था।
- यह राजस्थान का **सबसे छोटा** जिला है।
- राजस्थान का **पहला पंचायत मुख्यालय** जो सीधा **जिला** बन गया।
- दूदू जिले में सबसे कम **तीन तहसील**, **तीन थाने** और **एक पुलिस सर्किल** है।
- दूदू की पहली जिला कलेक्टर **डॉ अर्तिका शुक्ला** हैं और पहली एसपी **पूजा अवाना** हैं।
- **पर्यटन एवं धार्मिक स्थल** - भैराणा धाम (संत दादूदयालंजी का निर्वाण एवं समाधि स्थल), छापरवाड़ा बाँध, दूदू किला, मरवा किला, साखून किला, भर्तो की बावड़ी (मोजमाबाद), दिगंबर समाज का जैन मंदिर(गुफाओं का मंदिर), 52 परिवार की हवेली (मोजमाबाद) आदि ।

(iv) कोटपूतली-बहरोड़ (नवीनतम जिला) -

- इस नवीनतम जिले में निम्न लिखित **8 तहसीलों** को शामिल किया है -
  - ✓ कोटपूतली, बहरोड़, बानसूर, नीमराना, मांढण, नारायणपुर, विराटनगर, पावटा
  - ✓ **पूर्व जयपुर क्षेत्र** से कोटपुतली, विराटनगर, पावटा और **अलवर से** बहरोड़, बानसूर, नीमराना, मांढण, नारायणपुर आदि को नवनिर्मित जिला **कोटपूतली - बहरोड़** में शामिल किया गया है
- इस जिले के एक बड़े क्षेत्र को आमतौर पर **"राठ"** के रूप में जाना जाता है
- **विराटनगर** तहसील का उल्लेख **प्राचीन भारतीय ग्रंथों** में **मत्स्य साम्राज्य** की **राजधानी** के रूप में मिलता है
- **विराटनगर** में पर **लघु शिलालेख** और **भाबरू शिलालेख** मिले है यहां खुदाई से प्राप्त **मुद्राओं** से **इंडो-ग्रीक शासन** के स्पष्ट संकेत मिलते है।
- यहां **मोर्य कालीन सभ्यता** के प्रमाण मिले है।
- **इस जिले की आकृति** आसमान में उड़ते हुए **सारस** जैसी लगती है